SAMPLE

दिल्ली सल्तनत की स्थापना

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-10 ई.)

- दिल्ली सल्तनत के प्रथम राजवंश को 'दास', 'प्रारम्भिक तुर्क', 'मामेलुक', 'इल्बरी' आदि नामों से जाना जाता है।
- इस राजवंश को दास कहना उचित प्रतीत नहीं होता, क्योंकि इस वंश के नौ शासकों में से केवल तीन-कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश तथा बलबन ही अपने प्रारम्भिक जीवन में दास रहे थे और सत्ता ग्रहण करने से पूर्व उनके स्वामियों ने उन्हें दासता से मुक्त कर दिया था।
- 'मामेलुक' शब्द का अर्थ है- स्वतन्त्र माता-पिता से उत्पन्न हुए दास। लेकिन दासता का अर्थ इसमें निहित है।
- ये दास घरेलू कामकाज या आर्थिक कार्यों में संलग्न न रहकर 'सैनिक सेवा' करते थे ।
- सल्तनत के पहले राजवंश को इल्बरी' कहना अधिक उपयुक्त होगा, क्योंकि ऐबक को छोड़कर इस वंश के सभी शासक तुर्की की इल्बरी जनजाति से सम्बन्धित थे।
- तुर्की भाषा में कुतुबुद्दीन का अर्थ 'चन्द्रमा का स्वामी' होता है।
- ऐबक का राज्याभिषेक मुहम्मद गोरी की मृत्यु के तीन महीने के बाद, 24/25 जून, 1206 ई. में सम्पन्न हुआ।
- कुतुबुद्दीन "ऐबक जनजाति" का तुर्क था, इल्बरी तुर्क नहीं।
- मुहम्मद गोरी की मृत्यु के बाद उसके सरदारों- ताजुद्दीन यल्दौज, नासिरूद्दीन कुबाचा तथा कुतुबुद्दीन ऐबक में संघर्ष हुआ। गजनी के सिंहासन पर किरमान का शासक ताजुद्दीन यल्दूज आरुढ़ हुआ।
- भारत में प्रथम स्वतन्त्र तुर्की राजवंश की स्थापना ऐबक द्वारा की गयी। उसका राज्यारोहण 24/25 जून, 1206 ई. को लाहौर में हुआ। उसकी राजधानी लाहौर ही थी। उसने न ही सुल्तान की उपाधि धारण की, न ही अपने नाम पर सिक्के ढलवाये और न ही अपने नाम का खुत्बा पढ़वाया।
- सिंहासनारूढ़ होने के तीन वर्ष बाद 1208 ई. में गोरी के विधिक उत्तराधिकारी एवं भतीजा गियासुद्दीन महमूद द्वारा ऐबक को दासमुक्ति पत्र एवं सुल्तान की उपाधि प्रदान की गयी।
- ऐबक ने नये प्रदेश जीतने की अपेक्षा विजित प्रदेशों की सुरक्षा की ओर ध्यान देना ज्यादा जरूरी समझा।
- ऐबक के सिंहासनारूढ़ होने के बाद चन्देलों ने कालिन्जर पर पुनः अधिकार कर लिया और प्रतिहारों ने ग्वालियर छीन लिया।
- ऐबक को उसकी उदारता के कारण 'लाख बख्श' तथा 'पील बख्श' (हाथियों का दान करने वाला) कहा गया।
- इसके समकालीन बंगाल का सेन वंशी शासक लक्ष्मण सेन भी अपनी अत्यधिक उदारता के लिए विख्यात था।
- अत्यन्त सुरीले स्वर में कुरान पढ़ने के कारण उसे कुरानख्वाँ भी कहा जाता है।
- ऐबक के सेनानायक बख्तियार खिलजी ने प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त किया था।
- ऐबक ने दो मस्जिदें बनवायी-
  1. कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद (दिल्ली): यह भारत में इस्लामी पद्धति पर निर्मित पहली मस्जिद मानी जाती है। यह पृथ्वीराज तृतीय के किले राय पिथौरागढ़ के स्थान पर निर्मित किया गया है। इसका निर्माण 27 जैन मंदिरों के ध्वंशावशेषों पर हुआ है।
  2. अढ़ाई दिन का झोपड़ा (अजमेर)।
- उसने दिल्ली में 1199 ई. में कतुबमीनार का निर्माण कार्य शुरू करवाया एवं उसकी एक मंजिल बनवायी।
- कुतुबमीनार (दिल्ली) : मूलतः इराक निवासी सूफी संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में कुतुबमीनार का निर्माण 1199 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा शुरू किया गया, जिसे 1230-31 में इल्तुतमिश ने पूरा कराया। इसमें चार मंजिलें थीं। फिरोज शाह तुगलक के समय इस पर बिजली गिरने से ऊपरी मंजिल क्षतिग्रस्त हो गई। फ़िरोज़ ने इसकी जगह दो मंजिल बनवा दिया। इस प्रकार वर्तमान में इसमें कुल पाँच मंजिल हैं।

SAMPLE

- कुतुबमीनार पर नीचे से ऊपर की ओर घटते क्रम में पाँचों मंजिलों पर नक्काशीदार पट्टियाँ अंकित हैं, जिस पर कुरान की आयतें खुदी हुई हैं।
- कुतुबमीनार की पहली तीन मंजिलें लाल बलुआ पत्थर से बनी हैं, जबकि चौथी और पाँचवीं मंजिलें संगमरमर और बलुआ पत्थर से।
- नवम्बर, 1210 ई. लाहौर में चौगान (पोलो) खेलने के दौरान घोड़े से गिरकर ऐबक की मृत्यु हो गयी। उसे उसकी राजधानी लाहौर में ही दफनाया गया।
- ऐबक ने हसन निजामी तथा फखेमुदीर (फखमुदब्बिर) को आश्रय प्रदान किया। हसन निजामी ने ताजुल मासिर लिखी तथा फख-ए-मुदब्बिर (फखेमुदीर) ने आदाब-उल-हर्ब व अल शुजाता लिखी।

आरामशाह (1210 -11 ई.)

- ऐबक के मरणोपरांत प्रमुख तुर्की अमीरों ने आरामशाह को सिंहासनासीन किया, जो ऐबक का पुत्र था।
- मिनहाज-उस-सिराज ने लिखा है कि ऐबक के केवल तीन पुत्रियाँ ही थी।
- विद्रोहों पर नियंत्रण के लिए बदायूँ के गवर्नर (सूबेदार) इल्तुतमिश को दिल्ली आने का निमंत्रण दिया गया। उसने दिल्ली के निकट 'जूद के मैदान' में आरामशाह को पराजित किया। आरामशाह ने मात्र आठ महीने ही शासन किया।

इल्तुतमिश (1211 - 36 ई.)

- इल्तुतमिश को दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। वह इल्बरी तुर्क था। उसका पिता इलाम खाँ अपने इलाके का प्रधान था। दिल्ली की गद्दी पर बैठने से पहले वह बदायूँ का प्रान्ताध्यक्ष था। वह ऐबक का दास था। खोखरों के विरुद्ध उसकी सेवाओं के लिए ऐबक ने उसे दासत्व से मुक्त कर उसे अमीर-उल-उमरा का पद दिया। कृतज्ञता के कारण इल्तुतमिश ने अपनी पोशाकों पर सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक एवं सुल्तान मुइजुद्दीन गोरी के नाम अंकित करवाए।
- इल्तुतमिश के 26 वर्षीय शासन काल को तीन भागों में बाँटा जा सकता है-
  1. 1210-20 के काल में उसने अपने विरोधियों का दमन किया। इस दौरान उसने बदायूँ, अवध, बनारस एवं शिवालिक के अधीनस्थ राजाओं को अपने अधिकार में किया। उसने 1215-16 ई. में तराईन के युद्ध में यल्दूज को पराजित किया। यल्दूज की पराजय इल्तुतमिश के लिए दोहरी विजय थी। अब उसकी सत्ता को ललकारने वाले सबसे भयंकर शत्रु का विनाश हो गया था, जिससे गजनी से अन्तिम रूप से सम्बन्ध विच्छेद हो गया। इसके फलस्वरूप अब दिल्ली का स्वतन्त्र अस्तित्व सुनिश्चित हो गया। 1217 ई. में इल्तुतमिश ने कुबाचा को पराजित किया, लेकिन वह पूरी तरह कुचला न जा सका। 1227 ई. में जब इल्तुतमिश सिंध की ओर बढ़ा, तो कुबाचा ने सिन्धु नदी में डूबकर आत्महत्या कर ली।
  2. 1221-27 के दौरान उसने मंगोल आक्रमण की समस्या का समाधान किया।
  3. 1228-36 के दौरान उसने अपनी वैयक्तिक और वंशीय सत्ता के संगठन हेतु कार्य किये।

चंगेज खाँ

- चंगेज खाँ का जन्म 1155 ई. में मंगोल के तातारी पठार पर हुआ था। इसका मूल नाम तिमुचिन / तिमूजिन था।
- 1215 ई. में इसने पीकिंग (आधुनिक बीजिंग) पर और 1220 ई. में ट्रांसआक्सियाना पर अधिकार कर लिया। इसने 1220 में ख्वारिज्म के साम्राज्य को पूर्णतया नष्ट कर उस पर अपना अधिकार कर लिया। ख्वारिज्म का शाह कैस्पियन तट की ओर भाग गया और उसका युवराज जलालुद्दीन मंगबर्नी भागकर पंजाब की ओर आया।
- मंगबर्नी ने खोखर सामन्त से अपनी पुत्री का विवाह कर दिया तथा खोखरों की सहायता से मंगबर्नी ने कुबाचा को मार भगाया तथा सिन्ध, दोआब के ऊपरी भाग पर अधिकार कर लिया। चंगेज खाँ ने भी भारत पर आक्रमण करना उचित नहीं